DAILY ASSAM

पंचम अध्याय

वाक्य-विवेचन

वाक्य-परिचय

वाक्य :

वाक्य के लिए एक या एक से अधिक सार्थक शब्द का होना जरूरी है। उनमें क्रम भी होना चाहिए। शब्दों का आपसी संबंध भी हो। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसा हो, जिससे वक्ता अपनी बात को दूसरे के सामने रख सके और श्रोता उसे समझ सके। जैसे —

रोगी—श्रीमान। क्या मैं अन्दर जा सकता हूँ?

डॉक्टर—आइए।

रोगी—क्या अपना छाता भी साथ लेता आऊँ?

डॉक्टर—नहीं।

रोगी और डॉक्टर का वार्त्तालाप वाक्यों के माध्यम से हो रहा है। रोगी पूरा वाक्य बोल रहा है। परंतु डॉक्टर एक शब्द ही बोल रहा है। फिर भी रोगी उस शब्द का भाव समझ रहा है, अर्थात एक शब्द भी वाक्य है।

''पूर्ण अर्थ व्यक्त करने वाले शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं।''

वाक्य के आवश्यक तत्व :

वाक्य निर्माण के लिए पद-क्रम (शब्द-क्रम), अन्वय (मेल), सार्थकता (योग्यता) और आकांक्षा (जिज्ञासा) के होना जरूरी है।

1. पद-क्रम

वाक्य में पद-क्रम का होना जरूरी है।

(अ) हैं बहुत असम चाय बागान में।

ताजमहल में आगरे है।

एक बड़ा भारत देश हमारा है।

(आ) असम में चाय बागान बहुत हैं।

ताजमहल आगरे में है।

हमारा भारत एक बड़ा देश है।

ऊपर 'अ' वर्ग के शब्द ठीक क्रम में नहीं हैं और 'आ' वर्ग के शब्द ठीक क्रम में हैं। इसलिए 'अ' वर्ग के वाक्यों से हमें अर्थ नहीं मिल रहा है, किंतु 'आ' वर्ग के वाक्यों से ठीक अर्थ मिल रहा है। वाक्य में पहले कर्ता फिर कर्म और बाद में क्रिया होनी चाहिए। इसे ही आदर्श पद-क्रम कहते हैं।

टिप्पणी - बातचीत या कविता की भाषा में पद-क्रम इधर-उधर हो सकता है।

2. पदों में अन्वय या मेल

वाक्य में क्रिया पद के साथ कर्ता या कर्म का, विशेषण के साथ विशेषण (संज्ञा) का मेल होना जरूरी है। यदि वाक्य में वह मेल न रहे तो इच्छित अर्थ की प्राप्ति में कठिनाई होती है।

(अ) कलावती असम की महिलाएँ होती हैं।

यूरोप की महिलाओं से भारत की महिलाएँ अधिक प्रगतिशील होती हैं।

बिहु नृत्य का असम उत्साहवर्द्धक है।

गर्बा-नृत्य का गुजरात मनोमुग्धकारी है।

(आ) असम की महिलाएँ कलावती होती हैं।

भारत की महिलाओं से यूरोप की महिलाएँ अधिक प्रगतिशील होती हैं।

असम का बिहु नृत्य उत्साहवर्द्धक है।

गुजरात का गर्बा-नृत्य मनोमुग्धकारी है।

'अ' वर्ग के वाक्यों के पदों का आपसी मेल (अन्वय) ठीक नहीं है। इसलिए इच्छित अर्थ प्राप्ति नहीं हो रही है, परंतु 'आ' वर्ग के वाक्यों के पदों का आपसी मेल ठीक है। इसलिए इच्छित अर्थ की प्राप्ति हो रही है। 'अ' वर्ग के वाक्यों में की, का संबंधवाचक प्रत्यय को उसके निश्चित स्थान पर रख दिया गया है, इसलिए अर्थ भी बदल गया है। इसी तरह 'अ' वर्ग के वाक्य के 'से' तुलनामूलक प्रत्यय को निश्चित स्थान से हटा दिया गया, इसलिए अर्थ ही बदल गया है।

'पद-मेल' का अर्थ है कर्ता-क्रम से क्रिया का मेल और विशेषण से संज्ञा का मेल। 'पद-मेल' पर ध्यान रखने से इच्छित अर्थ की प्राप्ति होती है।

3. सार्थकता या योग्यता

वाक्य में सार्थक शब्दों को ही रखना चाहिए। वाक्य के समूह में शब्द से दूसरे शब्दों के अर्थ में मेल होना चाहिए। यदि हम शब्द संबंधी अर्थ व्यवस्था पर ध्यान नहीं रखेंगे तो पूरा वाक्य अर्थहीन हो जाएगा।

(अ) बैल दूध देता है।

आग से सिंचाई होती है।

आँखों से हम सुनते हैं।

(आ) गाय दूध देती है।

पानी से सिंचाई होती है।

आँखों से हम देखते हैं।

'अ' वर्ग के वाक्य में पद और अर्थ का समन्वय नहीं है। प्रकृत गुण युक्त अर्थ उससे नहीं मिलता, परंतु वर्ग 'आ' के वाक्यों का अर्थ हमारी समझ में आ रहा है, क्योंकि उसमें योग्य पद तथा पदों का आपसी अर्थ-संबंधी तादात्म्य है। उनसे प्रकृति के अनुकूल अर्थ निकलता है, जो लोकजीवन में सत्य है। अत: पहले प्रकार के वाक्य आदर्श वाक्य नहीं हो सकते।

''वाक्य में ऐसे योग्य पदों के प्रयोग को, जिससे प्रकृत अर्थ की प्राप्ति हो सके, पदों की सार्थकता या योग्यता कहते हैं।''

4. आकांक्षा

वाक्य के एक शब्द पद को सुनने के बाद श्रोता में दूसरे संबंधित पद को सुनने की सहज इच्छा होती है। इसलिए वाक्य के सभी पदों को आदर्श क्रम के आधार पर उसी समय बोलना चाहिए। रुक-रुक कर बोलने से वाक्य का अर्थ भी नहीं समझ सकते और सुनने वाले की आकांक्षा भी समाप्त हो जाती है।

उदाहरण :

(अ) फकरुद्दीन ..... मस्जिद.... जा...ता.....है।

कुरान ..... पवित्र ग्रंथ .....है।

बाइबिल ..... पवित्र.....ग्रंथ..... है।

नामघर ....पवित्र ..... स्थान..... है।

(आ) फकरुद्दीन मस्जिद जाता है।
कुरान पवित्र ग्रंथ है।
बाइबिल पवित्र ग्रंथ है।
नामघर पवित्र स्थान है।

'अ' वर्ग के वाक्य में पद की आवृत्ति समयानुसार नहीं है। वक्ता रुक-रुक कर पदों को बोल रहा है, जिससे श्रोता की जिज्ञासा आवेश में बदल जाती है और वह धैर्य खो कर वक्ता की बात नहीं सुनना चाहता।

'आ' वर्ग के वाक्यों में पदों का क्रम और आवृत्ति आकांक्षा के अनुकूल है। वक्ता अपने निश्चित क्रम और समय से उन्हें बोल रहा है।

अत: हमे वाक्यों का प्रयोग करते समय श्रोता की आकांक्षा को ध्यान में रखना तभी वाक्य सार्थक हो सकेगा।
वाक्य के एक पद को सुनने के बाद अगले पद को सुनने की जो सहज उत्कंठा होती है, उसे आकांक्षा कहते हैं।

टिप्पणी - उपर्युक्त तत्वों के साथ ही वाक्य के स्पष्टता, प्रवाह और भावानुकूल पद-व्याख्या भी होनी चाहिए।

अभ्यास

1. वाक्य किसे कहते हैं ?
2. वाक्य के मुख्य तत्व कौन-कौन से हैं ?
3. अंतर बताओ-
   (अ) पद और वाक्य। (आ) पद-क्रम और पद-अन्वय। (इ) सार्थकता और आकांक्षा।
4. नीचे लिखे वाक्यों को उपयुक्त वाक्यों में बदलो-
   (अ) हूँ मैं बड़ा गोपाल का भाई। (आ) रहा पढ़ता हूँ मैं चार दिनों से।
   (इ) विद्वानों सब दूर पूजा की होती है। (ई) सीता भात से दाल खाएगी।
   (उ) पानी से लकड़ी जलाओ। (ऊ) नाक से सुनो।

वाक्य के अंग

'मोहन वही लड़का है, जिसने मुझे मारा था।'

पूर्ण वाक्य में कर्ता-कर्म-क्रिया का होना जरूरी है और पूर्ण अर्थ की प्राप्ति भी होनी चाहिए। तभी हम उसे वाक्य कहते हैं। वाक्य को हम कोई भागों में विभक्त कर सकते हैं। उन्हें वाक्य का अंग कहते हैं। वैसे एक पद भी वाक्य का अंग है, परंतु संबंधित पदों के समूह को ही हम अंग कह सकते हैं।

ऊपर का वाक्य पूर्ण वाक्य है, इस वाक्य को यदि हम विभिन्न अंगों में विभाजित करें तो तीन आधारों पर ध्यान रखना होगा -
1. संबंधित पद-समूह या वाक्यांश। 2. वाक्य के खण्ड (भाग)। 3. उपवाक्य।

ऊपर के वाक्य में 'जिसने मुझे मारा था' वाक्यांश है। वाक्य के किसी अर्थपूर्ण अंश को वाक्यांश कहा जाता है।

'सोहन वही लड़का है' वाक्य के इस खंड में अर्थ की प्रतीति होने पर भी वह पूर्ण वाक्य नहीं है। ऐसे वाक्यों के अर्थ युक्त खण्ड को वाक्य-खण्ड' कहा जाता है।

एक वाक्य अगर किसी दूसरे मुख्य वाक्य के अधीन हो, तो उसे 'उपवाक्य' कहते हैं। जैसे - सोहन वही लड़का है, जिसने मुझे मारा था। इस वाक्य में 'सोहन वही लड़का' और 'मुझे मारा था' ये दोनों ही 'उपवाक्य' हैं।

अभ्यास

1. वाक्यांश किसे कहते हैं ?
2. वाक्य खण्ड किसे कहते हैं ?

वाक्य में विराम-चिह्न

विराम-चिह्न का अर्थ

विराम का अर्थ है - ठहरना। भाषा में भी भावों और अर्थों को अच्छी तरह समझने के लिए ध्वनि, पद, वाक्य के अंतर्गत ठहरना जरूरी है। वक्ता यदि विराम-चिह्न पर ध्यान न दें या लेखक विराम-चिह्न का प्रयोग करना ही भूल जाएँ तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

'भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए वाक्य या वाक्यों के अंतर्गत जिन चिह्नों का प्रयोग होता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।'

विराम-चिह्न के प्रकार

हिंदी में निम्न प्रकार के विराम-चिह्नों का प्रयोग होता है। जैसे -

	नाम	चिह्न	वाक्य में प्रयोग
1.	पूर्ण विराम	(।)	= मैं पढ़ती हूँ। वह सोता है।
2.	अल्प विराम	(,)	= गणेश, करीम, थॉमस, और सांगमा स्कूल जाते हैं।
3.	अर्द्ध विराम	(;)	= मैं दुखी हूँ; मुझे मत मारो।
4.	प्रश्नवाचक चिह्न	(?)	= क्या तुम पिकनिक चलोगे ?
5.	विस्मयादिबोधक चिह्न	(!)	= हाय ! मेरी बाल्टी कुएँ में गिर गयी।
6.	उद्धरण चिह्न	(“ ”)	= सुभास चंद्र बोस ने हमें “जयहिंद” का नारा दिया।
7.	कोष्ठक चिह्न	( ) [ ]	= राष्ट्रपिता (गांधीजी) को हमकभी नहीं भूलेंगे।
8.	विभाजक चिह्न	(-)	= कविता-कहानी कुछ तो लिखनाचाहिए।
9.	विवरण चिह्न	(:-)	= निम्नलिखित खण्ड को व्याख्या करो :-
10.	लोप चिह्न	(.....)	= मैं आगे कुछ नहीं कह ..... ।
11.	हंसपदक (त्रुटि पूरक)	(Λ)	= पुस्तक

	चिह्न		Λ गणेश ने पढ़ ली है।
12.	अपूर्णताबोधक चिह्न	(x x)	= राम ने कहा कि x x x
13.	पुनरुक्ति चिह्न	(,, ,,)	= सुबह उठने से बुद्धि बढ़ती है।
			,, ,, ,, शक्ति बढ़ती है।

विराम चिह्न का विश्लेषण

1. **पूर्ण विराम (।)** — वाक्य के पूर्ण होने पर यह चिह्न लगाया जाता है। जैसे - मैं इंदौर जाऊँगा।
2. **अल्प विराम (,)** — जिस वाक्य या वाक्यों में थोड़ी देर रुकने की आवश्यकता हो, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है।

जैसे - रमेश, गणेश, दिनेश और रमण पढ़ने गये। मैं, जब पढ़ रहा था, अचानक लालटेन बुझ गयी।

3. **अर्द्धविराम (;)** — जहाँ पूर्ण विराम से कम और अल्प विराम से अधिक देर तक रुक ाँ अर्द्ध विराम का प्रयोग है। इसका प्रयोग प्राय: मिश्र वाक्य में होता है।

जैसे - राम चोर है; उसे पकड़ो। वह भूखा है; उसे रोटी दो।

4. **प्रश्नवाचक (?)** — जिस वाक्य से प्रश्न करने या पूछने का बोध होता हो, उसके अंत में प्रश्नवाचक चिह्न लगाते हैं।

जैसे - क्या आप घर जा रहे हैं? वह कौन चिल्ला रहा है? वे किससे बाते करते थो?

5. **विस्मयादिबोधक (!)** — मन के सुख-दुख, शोक, लज्जा आदि भावों को व्यक्त करने के लिए इनका प्रयोग आश्चर्यबोधक शब्द के बाद और पूरे वाक्य के बाद किया जाता है।

जैसे - हाय! मुझे बचाओ। ओ हो ! तुम आ गये।

6. **उद्धरण चिह्न (" ")** — महान व्यक्तियों के कहे गये कथनों को ज्यों-का-त्यों लिखते समय उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।" मैं "जय जवान, जय किसान" में विश्वास रखता हूँ।

7. **कोष्ठक चिह्न ( )** — वाक्य में आये हुए अस्पष्ट अर्थ वाले शब्द के आगे कोष्ठक रख कर उसका सरल शब्द लिखने के लिए इसका प्रयोग होता है।

जैसे - राम (दशरथ-पुत्र) को कोई नहीं भूल सकता।

8. **विभाजक चिह्न (-)** — दो या दो से अधिक शब्दों को एक-दूसरे से मिलाने के लिए विभाजक चिह्न का व्यवहार किया जाता है। इसे सामासिक या योजक चिह्न भी कहते हैं।

जैसे - वह बार-बार झूठा बोलता है। राधा-कृष्ण की लीला अद्वितीय थी।

9. **विवरण चिह्न (:-)** — किसी के बारे में विस्तार से कहने के लिए इसका व्यवहार किया जाता है।

जैसे -

वल्लभ भाई पटेल पुरुष थे। जैसे :- .....। गोपीनाथ बरदलै आदर्श नेता थे। जैसे :- .....।

10. **लोपसूचक चिह्न (....)** — जब हम बोलते-बोलते कारणवश रुक जाते हैं, तब लोपसूचक चिह्न का व्यवहार करते हैं। वाक्य में भी छूटे हुए अंश के साथ इसका प्रयोग होता है।

जैसे- मेरी माँ तो आ गयी किंतु .... (बीमार है)

11. **त्रुटिपूरक चिह्न (Λ)** — इसे 'हंसपदक चिह्न' भी कहते हैं। जब वाक्य में लिखते-लिखते हम कुछ शब्दों को छोड़ देते हैं और बाद में उन भूलों को सुधार कर वाक्य के ऊपर लिखते हैं, उस समय इस चिह्न को व्यवहार किया जाता है और इस ठीक

चिह्न के ऊपर छुटा-हुआ शब्द या अंश लिख देते हैं। जैसे -

बजे

वह आज चार Λ दिल्ली जाने वाला है।

महापुरुष

तुलसीदास, शंकरदेव और चैतन्य महाप्रभु भारत के सच्चे Λ थे।

12. **अपूर्णताबोधक (x) —** लिखते समय कुछ पंक्तियाँ छूट जाती हैं, उस समय अपूर्णताबोधक चिह्न का व्यवहार किया जाता है। कहानी को संक्षिप्त करने में या कविता को छोटी करते समय इसका प्रयोग होता है। जैसे-

मेरा भाई नागपुर कल गया था।

x x x और आज आ गया।

कविता में

चारु चंद्र की चंचल किरणों x x x

x x x अवनी और अंबर तल में।

13. **पुनरुक्ति चिह्न (,, ,, ,,) —** जब एक ही विषय के बारे में बार-बार कहना हो तब पहले कहे हुए शब्दों के नीचे पुनरुक्तिबोधक चिह्न को लगाया जाता है। जैसे -

मेरी भारत भूमि महान है।

,, ,, ,, पवित्र है।

,, ,, ,, विशाल है।

,, ,, ,, मेरी माँ है।

,, ,, ,, का मैं रक्षक हूँ।

,, ,, ,, का इतिहास बहुत प्राचीन है।

विराम चिह्नों का महत्व

भाषा में यदि विराम-चिह्नों का प्रयोग छोड़ दे तो हमें अर्थ प्राप्ति में कठिनाई होती है या भाषा को विस्तार के साथ लिखना होता है। ये जितने भी चिह्न हैं, सब भाषा इस संबंधी कठिनाई और परिश्रम को दूर करते हैं। लिखित भाषा में इसका महत्व अधिक बढ़ जाता है। अत: चिह्नों के माध्यम से हम उसके वास्तविक अर्थ को समझ लेते हैं। जैसे - (चिह्नों के द्वारा अर्थ-बोध)

राम विद्यालय गया, तुम इधर आओ।

आप घर जा रहे हैं ?

आप घर जा रहे हैं।

आप घर जा रहे हैं मेरे लिए .....।

राम, मोहन और सोहन अब आ रहे हैं।

माता-पिता का कहना मानो।

अब गांधीजी नहीं रहें। ..... आदि।

यदि उपर्युक्त वाक्यों में सभी चिह्नों को हटा दें तो अर्थ-प्राप्ति में बाधा होगी। जैसे-

चोर को पकड़ो मत जाने दो

पुलिस को रोको मत आने दो

वह चला गया तुम आ गये

गणेश उमेश शेखर कल जा रहे हैं

तुम उनको बुलाओ पशु पक्षी फूल पौधे सब प्राणवान हैं

अभ्यास

1. विराम शब्द का क्या अर्थ है ?
2. वाक्य में विराम-चिह्नों के प्रयोग को क्या आवश्यकता है ?
3. नीचे के विराम-चिह्न के नाम बताओ-

   (।), (!), (x x x), (.....), (;), (?), (,),(“ ”), (,, ,, ,,),
   (), (:-), (—)

4. नीचे लिखे वाक्यों में विराम-चिह्न लगाओ।
   (अ) राम विद्यालय जा रहा है
   (आ) क्या आप कल मेरे घर आएंगे
   (इ) हाय रे बेटा तू कहा चला गया
   (ई) रमेश अब्दुल और कृष्णकांत आज अनुपस्थित है
   (उ) मैं पिकनिक जाता यदि मेरे पास पैसे .....
   (ऊ) स्त्री पुरुष सभी समान है